जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५२ वे ❖ अंक ८ वा ❖ एप्रिल २०२१ ❖ वीर संवत २५४७ ❖ विक्रम संवत २०७७

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● विश्व मानवता को महावीर का संदेश	२३	● महावीर का वीतराग दर्शन	९१
● कौटुंबिक मूल्यों के संवर्धक भगवान महावीर	२७	● सत्ता से सत्य की यात्रा समण भगवान महावीर	९५
● वर्तमान क्षण को सार्थक करें	२९	● ऐसी हुई जब गुरुकृपा – कोरा कागज यूँ मन राखणो	९६
● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा	३१	● जीवन बोध : सबसे मीठी चीज	९९
● कव्हर तपशील	३२	● प्राकृत ग्रंथ – परिचय (लेखमाला)	१०१
● अंतिम महागाथा २७ : करुणा के आँख में आँसू	४३	● अक्षय तृतीया	१०३
● मानव सेवेचे शिरोमणी श्री. प्रकाशभाऊ धारीवाल	५१	● हास्य जागृती	१०४
● रत्न संदेश	५७	● आनन्द वचनामृत	१०७
● उत्तम पुरुषों की गुणशीलता	६७	● रोग भगाए प्राणायाम	११३
● सुखी जीवन की चाबिया – पंद्रह सद्गुण उपासना, ११ : सौम्य भाव	७१	● शेवट गोड व्हावा	११७
● नवम् पापस्थानक लोभ	७७	● जीवन जागृति	११८
● सफल होना है तो... मन की शांति के ११ मंत्र	८१	● सासू सासरे नको मग अनाथ मुलाशी लग्न करा	११९
		● चौबीस तीर्थंकर कैवल्य वृक्ष	१२०
		● किमान सहा महिने पाळाच	१२१

- डायग्नोपिन, नागपूर शाखा – उद्घाटन १२३
- ॲड. बी.एल. छाजेड बापू १२४
- भगवान महावीर : ४ मुक्तक १२८
- स्वर्णिम ज्वेलर्स, पुणे १२९
- आनंद चोरडिया, पुणे – पुरस्कार १२९
- जैन परम्परा आणि मातंग वंश – पुस्तक १३१
- नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले, पुणे १३२
- जय जिनेंद्र प्रतिष्ठान, पुणे १३३
- विलक्षण पण अतुट नातं १३४
- सच्चा दोस्त १३५
- सेवा आत्मभाव है १३६
- जयती जैनम् साधना तीर्थ – भिवरी १३७
- कडवे प्रवचन १३७
- संचेती ट्रस्ट, पुणे १४०
- अरिहंत जागृती मंच, पुणे – निबंध स्पर्धा १३९
- सुर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूट, पुणे १४१
- श्री. विनोदभाई शहा, पुणे – पुरस्कार १४१
- मातृ–पितृ प्रतिष्ठान, पुणे १४३
- जैन सोशल ग्रुप, पुणे SKY १४३
- श्री. राहुलजी बोरुंदिया, पुणे १४४
- रसिकलाल एम धारीवाल फौंडेशन, पुणे १४५
- कॉस्मोपॉलिटन लेडिज सर्कल, पुणे १४५
- आनंदऋषिजी मेडिकल सेंटर, पुणे १४७
- सबसे बड़ा रोग क्या कहेंगे लोग १४८
- जागृत विचार १४९
- आरोग्य शिबीर १५१
- नगर रोड गौतमलब्धि फौंडेशन, पुणे १५३
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI

Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**

Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२–१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

विश्व मानवता को महावीर का संदेश

लेखक : दुलीचन्द जैन

भारत वर्ष में सहस्त्रों वर्षों से ज्ञान की धारा ऋषियों, मुनियों एवं तीर्थंकरों द्वारा अजस्त्र रुप से प्रवाहित हो रही है । इसी परंपरा के जाज्वल्यमय तेजपुञ्ज थे, जैन धर्म के २४ वें तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर कठोर तपस्या एवं ध्यान की गम्भीर साधना द्वारा उन्होंने आत्म-ज्ञान प्राप्त किया । वे अहिंसा और करुणा के अवतार थे । यद्यपि उनके उपदेशों को आज २५०० वर्षों से भी अधिक समय हो गया है, किन्तु वे आज भी पूर्ववत् स्फूर्तिदायक एवं प्रेरणास्पद हैं । पिछले २५०० वर्षों से लाखों करोड़ों व्यक्ति उनके जीवन और विचारों से प्रभावित हुए हैं तथा अहिंसा, शाकाहार और सदाचार का जीवन जीते आ रहे हैं । इस युग के महापुरुष महात्मा गांधी उनके जीवन से अत्यधिक प्रभावित थे । उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह के सिध्दांतों का राष्ट्रीय एवं सार्वजनिक जीवन में सफलतापूर्वक प्रयोग किया था।

महावीर का बचपन राजघराने के वैभवपूर्ण वातावरण में बीता । लेकिन सब प्रकार की समृध्दि प्राप्त होने पर भी महावीर की वृत्ति शान्त एवं गंभीर थी । समस्त उत्तमोत्तम भोग सुलभ होने पर भी उनमें इनका मन नहीं रमता था । उनकी दृष्टि कुछ और खोज रही थी। उन्होंने उस समय के समाज में व्याप्त विषय स्थितियों का गम्भीर अध्ययन किया । समाज में धर्म के नाम पर चलने वाले अंधविश्वास, यज्ञ में की जाती पशु-बली, नारी जाति का अपमान व शूद्रों पर किए जाते अमानवीय व्यवहार ने उनके हृदय को आंदोलित कर दिया । वे इन समस्याओं का स्थायी समाधान खोजने लगे । ३० वर्ष की पूर्ण यौवनावस्था में सारे संसार की आसक्तियों का त्याग कर साधना के मार्ग में वे एकाकी चल पड़े ।

श्रमण भगवान् महावीर ने साढ़े बारह वर्षों तक साधना की । उनका दिव्य एवं भव्य संयमी जीवन साधनामय जीवन का उत्कृष्टतम उदाहरण है ।

उनके जीवन का प्रत्येक पृष्ठ समता, सहिष्णुता, परदुखकातरता, त्याग, क्षमा और अभय की भावना से ओतप्रोत था । इस साधना काल में उन पर अनेक विपत्तियाँ एवं उपसर्ग आये, प्राकृतिक, मानवीय व दैवी संकटों के प्राणघातक तूफान प्रलयकाल की तरह आते रहे पर उन्होंने अपूर्व कष्ट-सहिष्णुता, तितिक्षा व क्षमा का आदर्श उपस्थित किया ।

एक बार जब वे छम्माणि गाँव में ध्यानस्थ थे, एक ग्वाला अपने बैल लेकर आया तथा उसने इनको कहा कि आप इनकी देखभाल करना । महावीर उस समय पूर्ण मौन साधना में निरत थे । उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया । थोड़ी देर बाद जब वह वापस आया तो उसे उसके बैल वहाँ नहीं मिले । क्रोधित होकर उसने महावीर के कानों में कीलें ठोंक दी । उन्हें असह्य वेदना हुई, पर उन्होंने उफ तक नहीं की । वे महाश्रमण ध्यान से विचलित नहीं हुए । इसी प्रकार श्रावस्ती में संगम नामक देव ने उनकी परीक्षा ली । एक ही रात्रि में उस देव ने श्रमण महावीर को इतनी यातनाएँ दी, इतने प्राणघातक कष्ट दिये कि वज्र-हृदय भी दहल जाये, किन्तु परमयोगी महावीर का एक रोम भी प्रकम्पित नहीं हुआ ।

साधना के तेरहवें वर्ष में ऋजुबालिका नदी के तट पर उन्हें कैवल्य प्राप्त हुआ । कैवल्य प्राप्ति के उपरांत ही उन्होंने उपदेश देना प्रारम्भ किया । लाखों व्यक्ति उनका उपदेश सुनने आने लगे तथा सहस्त्रों उनके

उपासक बने ।

भगवान् महावीर ने मनुष्य के उत्थान का जो मार्ग बताया उसे 'रत्नत्रय' कहते हैं जिसके तीन अंग हैं – सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र मनुष्य ज्ञान से जीवादि पदार्थों को जानता है, दर्शन से उनका श्रध्दान करता है, चारित्र से कर्मास्त्रव का निरोध करता है तथा तप से परिशुध्द होता है ।

तीर्थंकर महावीर ने चार बातों को बहुत दुर्लभ बताया : १) मनुष्य-भव, २) धर्म-श्रवण, ३) धर्म में श्रध्दा और ४) धर्म पालन में पराक्रम ।

महावीर की धर्म-क्रांति की मुख्य उपलब्धि है – ईश्वर की जगह कर्म की प्रतिष्ठा । उन्होंने कहा कि मनुष्य स्वयं ही अपना भाग्य विधाता है तथा कोई अन्य शक्ति उसका उध्दार नहीं कर सकती । उन्होंने कहा –

सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवन्ति ।
दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवन्ति ।।

अर्थात् अच्छे कर्म अच्छे फल देने वाले होते हैं तथा बुरे कर्म बुरे फल देने वाले होते हैं । इस संसार में जितने भी प्राणी हैं, वे अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही संसार-भ्रमण करते हैं तथा भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म लेते हैं – फल भोगे बिना उपार्जित कर्मों से प्राणी का कभी छुटकारा नहीं होता है । जीवन कर्मों का बंध करने में स्वतंत्र है पर उस कर्म का उदय आने पर फल भोगने में पराधीन हो जाता है । कर्म-फल भोगने का दुख व्यक्ति को स्वयं ही भुगतना पड़ता है तथा उसके मित्र, सम्बन्धी या पुत्र उसका दुख नहीं बाँट सकते ।

महावीर ने आत्म-तत्त्व की साधना पर बहुत जोर दिया । उन्होंने कहा –

जो सहस्सं – सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ ।।

अर्थात् दुर्जय संग्राम में सहस्त्र-सहस्त्र शत्रुओं को जीतने की अपेक्षा एक अपनी आत्मा को जीतना परम जय है – महान् विजय है । जो अपनी आत्मा को जीत लेता है, वही सच्चा संग्राम-विजेता है ।

साधक को चाहिए कि वह ज्ञान, ध्यान और तपोबल द्वारा इन्द्रिय विषयों और कषायों को उसी प्रकार नियन्त्रित करे जिस प्रकार एक चतुर सवार लगाम द्वारा घोड़ों को बलपूर्वक नियन्त्रित कर लेता है ।

आत्मा पर विजय कैसे प्राप्त की जाय ? इसके लिए भगवान् महावीर ने कहा कि दस आत्मा के शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने से आत्मा को जीता जा सकता है। वे शत्रु हैं : अपना अविजित मन, चार कषाय-क्रोध, मान माया और लोभ तथा पाँच इन्द्रियाँ-श्रोत, चक्षु, घ्राण, रसना और स्पर्शन । इन दसों को जीतने से ही आत्मा जीती जा सकती है ।

विवेकी पुरुष अपने हाथ, पाँव, मन व इन्द्रियों को वश में रखे । पापपूर्ण परिणाम, दुष्ट मनोभाव व भाषा दोष से अपने को बचावे । भगवान् महावीर ने कहा – क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय को नष्ट करता है, माया अर्थात् धूर्तता मैत्री को नष्ट करती है तथा लोभ सब कुछ नष्ट कर देता है ।

मन को अकुशल (अशुभ) विचारों से रोकना चाहिए तथा कुशल (शुभ) विचारों के लिए प्रेरित करना चाहिए । सच्चा धर्म किसे कहें ? भगवान् ने कहा –

''धम्मो मंगलमुक्किट्ठ' अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ।।''

अर्थात् धर्म उत्कृष्ट मंगल है । अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण है । जिसका मन सदा धर्म में रमता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं ।

वर्णाश्रम व्यवस्था में उस काल में जो विकृति आ गई थी, महावीर ने उस पर प्रबल प्रहार किया । उनके क्रांतिकारी स्वर उनकी निर्भीकता को प्रकट करते हैं –

''केवल सिर मुंडाने से कोई श्रमण नहीं होता, ओम् का जप करने मात्र से कोई ब्राम्हण नहीं होता, वन में रहने से कोई मुनि नहीं होता और न ही वल्कल धारण करने से कोई तपस्वी होता है । प्रत्युत् वह समता से श्रमण होता है, ब्रम्हचर्य से ब्राम्हण होता है ज्ञान से मुनि

होता है और तप से तपस्वी होता है ।

महावीर ने धर्म का द्वार गरीब और अमीर, ब्राम्हण और शुद्र सबके लिए खोल दिया । उन्होंने हरिकेशी जैसे चांडाल कुलोत्पन्न व्यक्ति को तथा सद्दालपुत्त नामक कुम्भकार को श्रमण दीक्षा दी । इस प्रकार वे एक जाति-विहीन व समता प्रधान समाज के प्रतिष्ठापक बने जहाँ व्यक्ति-व्यक्ति में किसी प्रकार का भेद नहीं किया जाता था ।

भगवान् महावीर ने चतुर्विध धर्म संघ की घोषणा की जिसके चार अंग थे - श्रमण, श्रमणी, श्रावक और श्राविका। नारी जाति को उन्होंने बहुत सम्मान दिया । वासना, विकार व कर्मजाल को काट कर नारी और पुरुष दोनों ही समान रुप से मुक्ति पाने के अधिकारी हैं। उन्होंने कहा - ''ऐसी भी शील गुण सम्पन्न स्त्रियाँ हैं, जिनका यश सर्वत्र व्याप्त है । वे मनुष्य लोक की देवियाँ है तथा देवों के द्वारा भी पूजनीय हैं ।'' चंदनबाला को श्रमणी संघ की प्रधान बनाना उनका एक अग्रगामी कदम था । इस प्रकार उन्होंने स्त्री जाती के लिए भी साधना का उच्चतम मार्ग प्रतिष्ठित कर दिया ।

भगवान् महावीर ने श्रमण-जीवन के लिए साधना के कठोर नियम निर्धारित किये । आज भी जैन श्रमण अहिंसा एवं अपरिग्रह की जीवंत मूर्तियाँ हैं । समाज से कम से कम लेना व उसको अधिक से अधिक देना उनके जीवन का लक्ष्य है । वे पैदल ग्राम-नगर विहार करके धर्म का प्रचार करते हैं, तपोमय जीवन जीते हैं, तथा अपनी श्रम-साधना पर पूर्णत: निर्भर रहते हैं । किन्तु गृहस्थों के लिए उनके नियम अपेक्षाकृत सरल थे। गृहस्थों के लिए उन्होंने अणुव्रतों व शिक्षाव्रतों के पालन पर जोर दिया । जहाँ एक श्रमण को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रम्हचर्य व अपरिग्रह का आजीवन पूर्ण पालन करना होता है, वहीं गृहस्थों को इनका अपनी सामर्थ्यानुसार पालन करने का विधान है ।

महाव्रतों में सबसे पहला व्रत है अहिंसा । अहिंसा का अर्थ मात्र इतना ही नहीं है कि किसी प्राणी की हिंसा न की जाय । इसका विधेयात्मक अर्थ है, विश्व के समस्त प्राणियों के प्रति प्रेम बन्धुत्व व आत्मीयता की भावना का विकास किया जाय । यह भावना मात्र मनुष्यजाति के प्रति ही नहीं हैं, समस्त प्राणी जगत् के प्रति व्याप्त है । जैन धर्म का सिध्दांत है कि मनुष्य और प्रकृति में घनिष्ठ सम्बन्ध है तथा दोनों एक-दूसरे पर आश्रित हैं । सृष्टि के प्रत्येक जीव को जीने का अधिकार है - केवल मनुष्य मात्र ही नहीं, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे इत्यादि सभी को अपने अस्तित्व को बनाये रखने का हक हैं । भगवान् महावीर ने कहा -

''सभी प्राणियों को अपना-अपना जीवन प्रिय है, सुख अनुकूल है, दुख प्रतिकूल है । वध सबको अप्रिय है । सब लम्बे जीवन की कामना करते हैं । अत: किसी जीव को त्रास नहीं पहुँचाना चाहिए तथा सब जीवों के प्रति मैत्री भाव रखना चाहिए ।''

महावीर ने भोजन के विवेक पर बहुत जोर दिया तथा मांसाहार का कठोर विरोध किया । एक गृहस्थ से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सप्त कुव्यसनों से दूर रहे। वे सप्त व्यसन है - जुआ, मांस-भक्षण, वेश्या-गमन, मद्यपान, शिकार, चोरी और पर-स्त्री गमन ।

आज विश्व में चारों ओर युध्द, हिंसा, अशान्ति, तनाव व आतंक व्याप्त है । आर्थिक प्रतियोगिता की अंधी दौड़ व अनियन्त्रित स्वतंत्रता ने मनुष्य के जीवन को त्रस्त बना दिया है । ऐसी परिस्थिति में भगवान् महावीर ने अहिंसा, समता व अनेकांत का जो संदेश विश्व को दिया उसके पालन की महती आवश्यकता है। यह संदेश जाति, वर्ग, वर्ण, भाषा एवं सम्प्रदाय-भेद से सर्वथा अतीत मनुष्य मात्र की सम्पत्ति है । इसका पालन करने से न केवल भौतिक जीवन में अभ्युदय की प्राप्ति हो सकती है वरन् पारलौकिक जीवन में नि:श्रेयस भी प्राप्त हो सकता है तथा संसार में शान्ति, प्रेम, एकता व भ्रातृभाव की भावना स्थापित हो सकती है । ●

कौटुंबिक मूल्यों के संवर्धक भगवान महावीर

लेखक : डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (निदेकश : अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र)

वर्धमान महावीर के जीवन की पहली विशेषता उनकी अद्‌भुत मातृभक्ति है । मातृभक्ति में पितृभक्ति और पारिवारिक निष्ठा भी समाविष्ट हो जाती है । वर्धमान जब माँ के गर्भ में थे, तब अवधि ज्ञान (अतीन्द्रिय ज्ञान) से उन्होंने जाना कि गर्भ में उनके स्वाभाविक हलन-चलन से माँ को कष्ट होता है । माँ को तनिक भी कष्ट न हो, इसलिए उन्होंने स्वाभाविक हलन-चलन भी बन्द कर दी । एक प्रकार से उन्होंने गर्भावस्था में ही कायोत्सर्ग का प्रयोग शुरु कर दिया । इससे माता त्रिशला बड़ी चिन्तित हो गई । यहाँ तक मूर्च्छित भी हो गई । गर्भस्थ शिशु ने माँ को चिन्तित-व्यथित जानकर पुन: स्वाभाविक हलन-चलन शुरु कर दी तथा यह संकल्प किया कि माता-पिता जीवित रहते वे दीक्षा नहीं लगें, वर्धमान महावीर ने अपनी प्रतिज्ञा और माता-पिता के प्रति अथाह सम्मान का पूर्णत: पालन किया । माता-पिता के प्रति अपनी भक्ति के लिए उन्होंने अपनी प्रव्रज्या के महान संकल्प को भी स्थगित किया ।

माता-पिता के प्रति सम्मान का आशय है - कौटुम्बिक प्रेम निभाना । कौटुम्बिक प्रेम का आशय है - स्नेह, सहयोग, सहिष्णुता, आज्ञाकारिता, त्याग, कर्त्तव्यपरायणता आदि कौटुम्बिक मूल्यों को जीना । इस प्रकार के कौटुम्बिक मूल्य और सद्‌गुण ही व्यक्ति को शिष्ट, विशिष्ट और आत्मानुशासित बनाते हैं । समाज, व्यवसाय तथा धर्म-कर्म के विविध क्षेत्रों में व्यक्ति के कौटुम्बिक मूल्यों और संस्कारों का प्रभाव भी होता है । व्यक्ति को अपनी जीवन-साधना और सत्पुरुषार्थ से माता-पिता और परिवार से प्राप्त अच्छाइयों को विकसित और अभिवृध्दित करना चाहिए ।

तीर्थंकर जन्म से तीन ज्ञान के धारी होते हैं । वर्धमान का तीर्थंकर बनना निश्चित था । माता त्रिशला के सपनों के सुफल बताने वाले स्वप्नशास्त्रियों ने भी इस आशय की घोषण कर दी थी । वर्धमान अपने शैशवकाल से ही विरल अतिशयों, विशिष्ट अर्हताओं और अतुल पराक्रम के धनी थे । उनकी वीरता और विरक्ति देखकर बड़े-बड़े अचंभित हो जाते थे । लेकिन वे बच्चों के साथ बच्चे बनकर खेलते थे । वे अपनी बाल मित्र मण्डली में दिल खोलकर खुशियाँ लुटाते थे । वे अपने परिवार में माता-पिता का खयाल रखते और बड़ों को सम्मान देते थे । वे सर्वत्र सबके चहेते बने हुए थे । तरुणावस्था आते-आते उनके विवाह की चर्चाएँ होने लगी । लेकिन माता-पिता उनकी चिन्तनशीलता, एकान्तप्रियता और संयममय दिनचर्या से हैरान रहने लगे । वर्धमान जल में कमल की तरह निर्लिप्त थे । वे विवाह के लिए सर्वथा अनिच्छुक थे । लेकिन यहाँ भी उन्होंने माता-पिता की भावना को सम्मान देते हुए विवाह करने का प्रस्ताव स्वीकार किया । वर्धमान ने विवाह करके उस परिवार संस्था को गौरव-मण्डित और उत्कर्षित किया, जिसकी स्थापना प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ऋषभदेव ने की ।

वर्धमान के माता-पिता भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा के श्रध्दानिष्ठ श्रावक-श्राविका थे । श्रावक धर्म की बहुआयामी आराधना करते हुए उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि जीवन की अन्तिम घड़ियाँ बहुत ही निकट है । अतिशय ज्ञानी वर्धमान भी माता-पिता की आयु-स्थिति को समझ रहे थे । माता-पिता के मनोभाव भी गहराई से महसूस करते थे । माता-पिता भी अपना हर मनोभाव वर्धमान से साझा करते थे । उन्होंने अपने महान सुपुत्र के समक्ष अन्तिम आराधना

संलेखना की भावना व्यक्त की । मृत्यु जैसे कठोर सत्य को समझते हुए भी उसे स्वीकार करने में हृदय उद्वेलित हो उठता है । लेकिन वर्धमान ने असीम धैर्य का परिचय दिया । वे अपने माता-पिता की समाधिमय अन्तिम आराधना में परम सहयोगी बने । ऐसा करके उन्होंने माता-पिता की सेवा-भक्ति को सर्वोच्च आध्यात्मिक ऊँचाई और उत्कर्ष प्रदान किया । वर्धमान ने सबको माता-पिता की सेवा-भक्ति करने, उनके प्रति अपना फर्ज निभाने तथा माता-पिता के कर्ज से मुक्त होने की साधनामय राह भी दिखाई ।

माता-पिता के देवलोकगमन के पश्चात् सम्पूर्ण परिवार और राज्य में शोक का वातावरण छाया हुआ था, लेकिन वर्धमान स्थितप्रज्ञ बने हुए थे । कुछ दिन व्यतीत होने के उपरान्त जीवन-मरण के रहस्यों को जानने वाले वर्धमान अपने अभिनिष्क्रमण के बारे में विचार करने लगे । वे अपने बड़े भाई नन्दीवर्धन और चाचा सुपार्श्व के समक्ष अपनी भावना व्यक्त करने तथा उनसे आज्ञा लेने के लिए उनके पास गये । उन्होंने कहा - ''मेरी प्रव्रज्या से माता-पिता का हृदय दुखी न हो, केवल इसीलिए मैं अब तक रुका रहा । माता-पिता की खुशी के लिए ही मैंने विवाह का बंधन स्वीकार किया । अब, मुझे दीक्षा की आज्ञा दीजिए ।''

पहले ही शोकाकुल भाई और चाचा; वर्धमान के दीक्षा की आज्ञा प्रदान करने के अनुरोध पर भाव-विह्वल हो उठे । भ्रातृत्व से लबालब भरे नन्दीवर्धन तो रो पड़े । फिर वे अपने आपको संभालकर वर्धमान से आग्रह करते हैं - ''तुम अठ्ठाईस वर्ष तक माता-पिता की खुशी के लिए रुके रहे । तो क्या बड़े भाई की खुशी के लिए कुछ समय और नहीं रुक सकते... ?''

इस कथन पर मातृ-पितृ-भक्त कुमार वर्धमान का भ्रातृत्व भी जाग उठा । उन्होंने कहा -''आपकी आज्ञा और इच्छा का सम्मान करना मेरा कर्त्तव्य है । मैं आपके असीम स्नेह और वात्सल्य का आदर करता हूँ। लेकिन आप बताएँ कि कब तक मुझे रुकना पड़ेगा ?''

ज्येष्ठ भ्रातावर नन्दीवर्धन ने कहा - ''दो वर्ष तक।''

वर्धमान ने कहा - ''भ्रातावर ! आपकी आज्ञा के अनुसार मैं मेरी प्रव्रज्या को दो वर्ष के लिए स्थगित कर दूँगा, लेकिन मेरी भी कुछ इच्छा है ।''

नन्दीवर्धन ने इच्छा के लिए पूछा तो वर्धमान ने कहा कि वे इन दो वर्षों की अवधि में घर में रहते हुए भी अनगार की तरह रहना चाहेंगे, त्याग-तपमय जीवन जिएँगे । महान भाग्यवान भाई नन्दीवर्धन और चाचा सुपार्श्व ने वर्धमान की अनुत्तर भावना का पूरा सम्मान किया और उनकी भावना के अनुरुप प्रबंधन भी किया।

बड़े भाई, छोटे भाई और चाचा के इस सारे संवाद में कहीं भी, आसपास और दूर-दूर तक धन-सम्पत्ति, सत्ता और अधिकार की कोई चर्चा नहीं है । है तो केवल एक-दूसरे की श्रेष्ठ भावनाओं का सम्मान, प्रेम और त्याग । पारिवारिक मूल्यों के उत्तम आदर्शों का सम्मान करने वाले ही अध्यात्म-मार्ग के सच्चे आराधक बन सकते हैं ।

वर्धमान ने अपने परिवार, पारिवारिक संरचना और सामाजिक परिवेश को समझकर हर कदम उठाया । माता-पिता की दिवंगति के बाद उन्होंने अपने अग्रज और चाचा के अलावा अपनी पत्नी यशोदा, बहिन सुदर्शना, बेटी प्रियदर्शना आदि सभी परिजनों को अपने अभिनिष्क्रमण के लिए राजी किया । वे दीक्षा के जन्मगत सत्संकल्प में भी पग-पग पर परिवार और पारिवारिक मूल्यों का सम्मान करते है । उनके वैराग्य और अभिनिष्क्रमण में कहीं भी लेशमात्र पलायनवाद, शिकायत या अवज्ञा नहीं हैं ।

वर्धमान जब तीर्थंकर महावीर बन जाते हैं और उनकी देशना सुनकर कोई उनके पावन चरणों में दीक्षित होना चाहता है तो भगवान महावीर कहते हैं कि अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर आओ । जैन संघों में आज भी यह व्यवस्था कायम है । यह व्यवस्था कर्तव्यपरायणता, माता-पिता और परिवारजनों का सम्मान और परिवार-संस्था की महत्ता के साथ जुड़ी

है।

स्थानांग सूत्र में भगवान महावीर ने दस धर्मों में 'कुल-धर्म' (कुटुम्ब-धर्म) को भी स्थान दिया, जो पारिवारिक कर्त्तव्यों के निर्वहन और पारिवारिक मूल्यों के संरक्षण पर बल देता है । उन्होंने सद्गृहस्थ के लिए अणुव्रतों की आदर्श जीवनशैली प्रदान की, जिसमें पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों के प्रति निष्ठा के सत्यसंकल्प भी समाविष्ट हैं ।

स्नेहिल-सुदृढ़ परिवार-संस्था एक ओर श्रेष्ठ व्यक्तित्व और अनुशासित नागरिक के निर्माण में सहायक होती है, दूसरी और इससे समाज की शक्ति बढ़ती है और सामाजिक- मानवीय मूल्य पुष्ट-पोषित होते हैं । ऐसे अनुकूल वातावरण में ही धर्म और अध्यात्म के उपवन फलते-फुलते और खिलते-महकते हैं । भगवान महावीर ने 'सांसारिक परिवार' और 'धर्म-परिवार' के बीच जो अनेकान्तमय रिश्ता कायम किया है, वह बड़ा ही विलक्षण है । उसे समझने और अपनाने की आवश्यकता है । ●

वर्तमान क्षण को सार्थक करें

लेखक : आचार्य श्री शिवमुनिजी म.सा.

नववर्ष नई उमंग, नया उत्साह, नई स्फूर्ति, नई चेतना का संदेश लेकर आया है ।

भूत-भविष्यत् की कल्पना को त्याग कर वर्तमान में रहने की प्रेरणा प्रदान करते हुए प्रभू महावीर की वाणी का संदेश -

खणं जाणहि पण्डिए
इणमेव खणं वियाणिया ।।

जो वर्तमान क्षण को जानकर उसे आत्मसात् करता है, वही ज्ञानी है, वही पण्डित है । भूत चला गया, भविष्य की कल्पना को छोड़कर, वर्तमान क्षण को जानकर उसमें स्थिर रहने का प्रयास करना चाहिए ।

यहाँ क्षण का अर्थ अवसर है । जो ये समय हमारा मनुष्य जीवन में, जीवित रहने को मिला है । कितने मनुष्य दुनियाँ में ऐसे है जो वर्ष २०२१ नहीं देख पाए । हमें ये अवसर मिला है तो हम इस अवसर का उपयोग वर्तमान क्षण में जीव (आत्मा) को देकर करें । वर्तमान में स्थित होना अर्थात् देह से पार जीव को जीव में स्थित करना है, जीव का कल्याण करना है, जीव का कल्याण धर्म से होता है ।

जीव का उसके अस्तित्व में बने रहना ही धर्म है । जिसने जीव-अजीव के भेद को जान लिया यानि उसे अन्त:करण से समझकर आत्मसात् कर लिया, अजीव यानि पुद्गल यहाँ पुद्गल में शरीर, शरीर से जुड़े सारे सम्बन्ध, सुख-सुविधा के साधन आदि का त्याग याने पुद्गल में सुख है ही नहीं । पुद्गल में सुख है उस अज्ञान का त्याग, मिथ्यात्व का त्याग, मोह का त्याग कर जीव में स्थित रहने का जिसने पुरूषार्थ किया, उसने वीतराग वाणी को जान लिया ।

जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ ।

एक यानि जीव का अनुभव कर लिया, उसने धर्म को आत्मसात् कर लिया । काश ! हम अपने आपको यानि जीव (आत्मा) को जान ले । जीव में अष्टगुण की सम्पदा है । अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त शक्ति, निराकार, अगुरू लघुत्व, स्व-स्व में स्थित करना यानि क्षायिक सम्यक्त्व, अटल अवगाहना आदि भीतर है । हम सुख, शक्ति बाहर ढूँढ रहे है ।

प्रभू महावीर ने उस ज्ञान, सुख, शक्ति को अपने भीतर प्राप्त किया । उन्होंने अनन्त ज्ञान से केवल ज्ञान प्राप्त किया । तीनों लोक को जान लिया ।

नववर्ष हमारे लिए नई चेतना का वरदान लेकर आया है । हम ढूँढे भीतर, पाए भीतर । कबीर ने कहा है-

कस्तुरी कुण्डल बसे, मृग ढूँढे वन मांहि ।
ऐसे घट-घट राम है, दुनियाँ देखत नाहि ।। ●

भारत सरकार जनगणना २०२१ – डिजिटल जनगणना

उठा जैन हो... जागे व्हा, जागृत व्हा * जैन बांधव जागृती अभियान

धर्माच्या कॉलम मध्ये फक्त ''जैन'' लिहा.

भारत सरकार दर १० वर्षांनी राष्ट्रीय जनगणना करीत असते. मागील जनगणना २०११ साली झाली व आता जनगणना २०२१ साली होणार आहे. यावर्षी जनगणना पेपरलेस असल्यामुळे टॅबलेट वर माहिती भरुन घेतली जाणार आहे. जनगणनेला लवकरच सुरुवात होणार आहे.

२०११ च्या या जनगणनेत जैन धर्मियांची जनगणना फक्त ४५ लाख दाखवण्यात आली. पण वास्तव मध्ये जैन धर्मियांची लोकसंख्या या पेक्षा बरीच जास्त आहे. जाणकार व गुरुदेवांच्या मते जैन धर्मियांची संख्या २ ते ३ कोटी असावी.

जैन धर्मियांची लोकसंख्या जनगणनेत कमी येणे याला पुढील कारणे सांगता येतील...

☛ जनगणना प्रतिनीधी जेव्हा आपल्या घरी येतो त्यावेळी बरेच लोक धर्माच्या कॉलमच्या पुढे श्वेतांबर जैन, दिगंबर जैन, स्थानवासी जैन, हिंदू जैन, जैन हिंदू, हिंदू, ओसवाल जैन, पोरवाल जैन इ. असे लिहितांना दिसत आहेत. असे न लिहीता धर्माच्या कॉलमपुढे फक्त 'जैन' लिहा. जैन धर्म हा स्वतंत्र व अती प्राचीन धर्म आहे. जैन धर्म कोणत्याही धर्माची शाखा किंवा उपशाखा नाही.

☛ जनगणना प्रतिनीधी जेंव्हा फॉर्म भरतो त्यावेळेस न विचारता धर्माच्या कॉलम मध्ये मनाने धर्म लिहितो. असा अनेकांचा अनुभव आहे.

☛ जनगणना प्रतिनीधी जेव्हा घरी येतो, त्यावेळेस जास्त करुन महिला वर्ग किंवा मुले घरात असतात. त्यांना धर्माच्या कॉलममध्ये काय लिहावे याची जागृती नसल्यामुळे धर्माच्या कॉलममध्ये चूकिची नोंद केली जाते.

☛ फॉर्म भरुन झाल्यावर संपूर्ण फॉर्म नीट वाचून धर्माच्या कॉलम मध्ये ''जैन'' लिहिले आहे का हे पहावे.

जनगणना फॉर्म मध्ये मातृभाषेच्या कॉलम बरोबर अजून कोणती भाषा जाणता असा कॉलम आहे. त्यात आपण 'प्राकृत' पण लिहा. आपले बरेच ग्रंथ प्राकृत भाषेत आहेत. आपण रोज प्रार्थना म्हणतो. त्यातील बरेच श्लोक प्राकृत भाषेत आहेत. जाणणाऱ्या भाषेत ''प्राकृत''चा उल्लेख जरुर करा. सरकारी दप्तरी 'प्राकृत' भाषेचे अस्तित्व टिकवू या.

केंद्र सरकार व राज्य सरकार राष्ट्रीय जनगणनेला आधार मानून विविध योजना ठरवितात. तसेच विविध राजकीय पक्षही या जनगणनेच्या आधारे आपले उमेदवार निवडतात व विविध योजना अमलात आणतात. लोकशाहीचे तत्त्वज्ञान आहे 'जितनी जिनकी संख्या भारी, उतनी उनकी भागिदारी'. यासाठी जैनांची खरी लोकसंख्या राष्ट्रीय जनगणनेत येणे आवश्यक व महत्वाचे आहे.

जैन समाजातील नेते, विविध संस्था, आचार्य भगवंत व साधू–साध्वी यांनी या गोष्टीकडे विशेष लक्ष देऊन या संदर्भात जैन बांधवाना जागृत करुन धर्माच्या कॉलममध्ये फक्त 'जैन' लिहा असा प्रचार करावा.

आपले अस्तित्व चिरनिरंतर टिकवू या. कोट्यावधीची जैन संख्या आता फक्त काही लाखावर जनगणनेत दिसते. जैन धर्म भारत सरकार राष्ट्रीय जनगणनेच्या आधारे नामशेष होऊ नये म्हणून हे जनगणनेचे जैन बांधव जागृती अभियान संपूर्ण भारतभर करण्याचा संकल्प प्रकट करु या. याचा प्रचार जास्तीत जास्त करा.

प्रेषक : संजय चोरडिया, संपादक – जैन जागृति

कव्हर तपशील - एप्रिल २०२१

❖ **मानव सेवेचे शिरोमणी श्री. प्रकाशभाऊ धारीवाल**

पुणे येथील उद्योजक व धार्मिक, सामाजिक कार्यात अग्रेसर श्री. प्रकाशभाऊ धारीवाल यांच्यावर श्री. विजयजी दुगड यांनी लिहिलेला ''मानव सेवेचे शिरोमणी - श्री. प्रकाशभाऊ धारीवाल'' हा लेख पान ५१ वर प्रसिध्द केला आहे.

❖ **श्री. आनंदजी चोरडिया - टाईम्स पुरस्कार**

'टाईम्स ग्रुपच्या' वतीने सुहाना उद्योग समूहाचे श्री. आनंदजी राजकुमारजी चोरडिया यांना 'टाईम्स मेन ऑफ दि इयर २०२० वेस्ट इंडिया' पुरस्काराने अभिनेत्री मंदिरा बेदी यांच्या हस्ते सन्मानित करण्यात आले.
(बातमी पान नं. १२९)

❖ **डायग्नोपिन डायग्नोस्टिक सेंटर - नागपूर**

पुणे येथील उद्योजक श्री. प्रफुल्लजी कोठारी व श्री. मितेशजी कोठारी यांनी डायोग्नोपिन डायग्नोस्टिक सेंटरची १३ वी शाखा पंचशील चौक, धंतोली, नागपूर येथे सुरु केली.

केंद्रीय मंत्री नितीन गडकरी यांच्या हस्ते डायग्नोपिन डायग्नोस्टिक आणि मल्टी स्पेशलिटी डेंटल सेंटरच्या नागपूर शाखेचे उद्घाटन करण्यात आले. सोबतच लोकमत समूहाचे चेअरमन आणि राज्यसभा खासदार विजयबाबू दर्डा, श्री गुरु गौतममुनी डायलेसिस सेंटरचे संस्थापक सतीशजी बनवट, गौतम निधीचे राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिलजी नहार आदि मान्यवर उपस्थित होते. यावेळी श्री. प्रफुल्लजी व मितेशजी कोठारी यांनी सर्व मान्यवरांचे स्वागत केले. (बातमी पान नं. १२३)

❖ **जैन परंपरा आणि मातंग वंश - पुस्तक**

जैन धर्माचे अभ्यासक श्री. विठ्ठल साठे लिखित 'जैन परम्परा आणि मातंग वंश' या पुस्तकाचे प्रकाशन श्री. संजय सोनवणी यांच्या हस्ते झाले. यावेळी सोबत श्री. विठ्ठलजी साठे, श्री. राजेंद्रजी सुराणा, श्री. विजयजी पारख, श्री. श्रीपालजी ललवाणी, श्री. राजेंद्र भोंडवे, श्री. पांडुरंग दुबळे, श्री. सनी भोंडवे, श्री. शंकर वाघमारे इत्यादी.
(बातमी पान नं. १३१)

❖ **नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले - शिलाई मशिन वाटप**

दि. ८ मार्च जागतिक महिला दिनानिमित्त प्रभागातील गरजू महिलांना शिलाई मशिन व पुष्पगुच्छ नगरसेवक प्रवीणजी चोरबेले व मा. नगरसेविका सौ. मनिषा प्रवीणजी चोरबेले यांच्या तर्फे देऊन साजरा करण्यात आला.

जीतोचे अध्यक्ष श्री. ओमप्रकाशजी रांका, प्रसिध्द कर सल्लागार श्री. सतिशजी सुराणा, जैन जागृतिचे संपादक श्री. संजयजी चोरडिया, सुकांता हॉटेलचे मालक श्री. विजयकुमारजी मर्लेचा, उद्योगपती श्री. अनिलजी भंसाळी यांच्या हस्ते शिलाई मशीन व पुष्पगुच्छ देऊन महिलांचा सन्मान करण्यात आला. (बातमी पान नं. १३२)

❖ **स्वर्णिम ज्वेलर्स, पुणे - ज्वेलरी एक्सिबिशन**

पुणे येथील श्री. अमयजी महेंद्रजी शिंगवी यांनी सात वर्षापूर्वी लाईट हाऊस, बिबवेवाडी-कोंढवा रोड, पुणे ३७ येथे ज्वेलर्सचे भव्य शोरुम सुरु केले व अल्पकाळात त्यांनी सराफ व्यवसायात

नावलौकिक मिळवला. श्री. अमयजी व सौ. अंकिता शिंगवी यांनी ५ ते ७ मार्च या दरम्यान जे. डब्ल्यु. मॅरियेट येथे आपल्या एक्सक्ल्युसिव्ह दागिन्याचे प्रदर्शन आयोजित केले होते. या दरम्यान अनेक मान्यवरांनी या प्रदर्शनाला भेट दिली. या वेळी भारतीय जैन संघटनेचे श्री. शांतीलालजी मुथा यांनी शिंगवी परीवाराला शुभेच्छा दिल्या. (बातमी पान नं. १२९)

❖ **संचेती ट्रस्ट, पुणे – पाणपोई उद्घाटन**

पुणे : स्व. इंदुमती बन्सीलाल संचेती या ट्रस्टच्या वतीने मार्केट यार्डात पाणपोईची सुरुवात करण्यात आली. या पाणपोईचे उद्घाटन मार्केट यार्डचे वरिष्ठ पोलीस निरीक्षक श्री. दुर्योधनजी पवार साहेब, महाराष्ट्र प्रदेश काँग्रेस कमिटीचे सरचिटणीस श्री. अभयजी छाजेड, पूना मर्चंट चेंबरचे अध्यक्ष श्री. पोपटलालजी ओस्तवाल, तसेच श्री. अभयजी संचेती, श्री. विजयजी शिंगवी, श्री. जेठमलजी दाधीच, श्री. मनीषजी संचेती, श्री. सुरेशजी वानगोता, श्री. संतोषजी संचेती यांच्यासह अनेक मान्यवर मोठ्या संख्येने उपस्थित होते. (बातमी पान नं. १३९)

❖ **जैन सोशल ग्रुप, पुणे SKY – शपथविधी**

जैन सोशल ग्रुप, पुणे SKY चा शपथविधी समारोह यश लॉन्स, पुणे येथे भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाला. JSG SKY या नवीन ग्रुपचे संस्थापक अध्यक्ष म्हणून श्री. आदेशजी दिलीपजी चोरबेले यांनी शपथ ग्रहण केली. या वेळी बिरेनभाई शहा, मनेषभाई शहा, लालचंदजी जैन, हरकचंदजी सोलंकी, दिलीपजी चोरबेले, प्रविणजी चोपडा, राजेंद्रजी धोका, दिलीपभाई मेहेता, हसमुखभाई जैन, अमोल झवेरी, युवराज शहा, संतोष बाठीया. इत्यादी मान्यवर व JSG SKY. सर्व कमिटी मेंबर व सभासद उपस्थित होते. (बातमी पान नं. १४३)

❖ **श्री. विनोदभाई शहा, पुणे – पुरस्कार**

मुंबई मधील 'साहित्य-कला क्षेत्रातील नामवंत संस्था - अक्षरमुद्रा, मधुरंग, साहित्य गौरव कविता प्रेमी साहित्य मंच' यांच्या वतीने ऑक्टोबर २०२० मध्ये 'पहिली आंतरराष्ट्रीय ऑनलाईन चारोळी स्पर्धा - २०२०' साकार झाली. त्यामध्ये पुण्याचे श्री. विनोदभाई शहा यांना या पहिल्या-वहिल्या आंतरराष्ट्रीय स्पर्धेमध्ये 'तृतीय पुरस्कार' देऊन गौरवान्वीत करण्यात आले. (बातमी पान नं. १४१) •

जैन जागृति

जैन समाजात जाहिरातीचे उत्तम व प्रभावी माध्यम

WE ARE

BRAND CREATORS

ADVERTISE WITH US

Jain Jagruti

(Since 1969)

Mobile : 9822086997, 8262056480
E-mail : jainjagruti1969@gmail.com
Website : www.jainjagruti.in